SSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 8.877 (SJIF)

50 years of Anu Books

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - XV No. 4 Oct.-Dec. 2024

प्रधान संपादकः
प्रो० (मेजर) अंजुला राजवंशी

प्रकाशक
अनु बुक्स
दिल्ली मेरठ ग्लासगो

स्व-प्रमाणित

शोध मंथन Vol. XV No IV Oct - Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http://shodhmanthan.anubooks.com*

'बिहारीसतसई' में नीति तत्व

प्राप्तिः 18.10.2024
स्वीकृतः 20.12.2024

82

श्रीमती शशि चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
हिमवन्त कवि चन्द्र कुँवर वर्त्वाल राजकीय महाविद्यालय
नागनाथ पोखरी, चमोली
ईमेल: shashi.panwar456@gmail.com

सारांश

हिन्दी साहित्य के इतिहास में उत्तरमध्यकाल को रीतिकाल कहा जाता है । रीतिकाल कला एवं साहित्य के दृष्टिकोण से समृद्धि और विलासिता का काल था। इस काल में काव्य में जहाँ जनता की समस्याओं की उपेक्षा की गई वहीं शिल्प सौन्दर्य के दृष्टिकोण से यह सम्पन्न रही। रीतिकाल में अधिकांश कवियों ने रीति निरुपण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे। बिहारीलाल ने स्वतंत्र रूप से रीति ग्रन्थ नहीं लिखे बल्कि रीति विषयक जानकारी का उपयोग अपने दोहों में किया जिस कारण वे रीतिसिद्ध कवियों की श्रेणी में आते हैं। रीतिकाल के कवियों में बिहारी का प्रमुख स्थान है। बिहारी जयपुर के मिर्जा राजा जयसाह (जयसिंह) के दरबारी कवि थे। जयसिंह ने ही बिहारी को सरस दोहे रचने की प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप बिहारी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की। बिहारी मुख्य रूप से श्रृगांर के कवि माने जाते हैं। बिहारी के दोहे सरस, व कल्पना की समाहार शक्ति से पूर्ण हैं इनके दोहे गागर में सागर भरने की भाँति हैं। बहारी सतसई' में श्रृंगार, भक्ति एवं नीति विषयक दोहे संकलित हैं। इनकी नीति सम्बन्धी उक्तियाँ मानव जीवन का सार प्रस्तुत करती हैं जो इनके सांसारिक जीवन अनुभवों का समाहार है। सँस्कृत साहित्य में भर्तहरि,पं0 विष्णु शर्मा आदि कवियों ने नीति ग्रन्थ लिखे हिन्दी में भक्तिकाल में नीति आध्यात्मिक भक्ति से सम्बंधित थी जो रीतिकाल में लोक व्यवहार पर आधारित हो गयी। रीतिकाल में नीति साहित्यकार के रूप में गिरधर कविराय,वृन्द, घाघ, बैताल, सम्मन तथा दीनदयाल गिरि आदि माने जाते हैं। बिहारी ने अपने नीतिपरक दोहों में लोक व्यवहार सम्बन्धी ज्ञान का परिचय दिया व विभिन्न परिस्थितियों में मानव व्यवहार का मूल्यांकन किया।

मूख्य बिन्दु

नीति, बिहारी लाल, रीतिकाल

स्व-प्रमाणित

प्रस्तावना

नीति साहित्य जीवन संघर्षो में मानव व्यवहार का मार्ग सहज–सरल वनाता है । यह लोक व्यवहार के वे सिद्धात हैं जो उचित निर्णय में सहायक होते हैं । प्राचीन काल से ही हमारे देश में नीति साहित्य की परम्परा चली आ रही है। वेद एवं पौराणिक साहित्य में नीति विषयक विचार मिलते हैं। सॅस्कृत साहित्य में भर्तहरि, पं0 विष्णु शर्मा आदि कवियों ने नीति ग्रन्थ लिखे। भक्तिकाल में नीति आध्यात्मिक भक्ति से सम्बंधित थी जो रीतिकाल में लोक व्यवहार पर आधारित हो गयी । हिन्दी में रहीम, कबीर, तुलसी, गिरिधर कविराय, वृद्ध, आदि प्रमुख नीतिकार माने जाते हैं।कतिपय रीतिकालीन कवियों के काव्य में नीति विषयक वर्णन देखने को मिलता है जिसमें विहारीलाल जी का 'विहारी सतसई' भी प्रमुख है।'बिहारी सतसई' श्रृंगार, भक्ति एवं नीति की त्रिवेणी कही जाती है। विहारी बहुविषयक ज्ञाता थे। उनके दोहे में रीति विषयक, ज्योतिष, चिकित्सा, वेद पुराण, आयुर्वेद आदि ज्ञान देखने को मिलता है। बिहारी ने रीति की जानकारी का पूरा–पूरा प्रयोग अपने काव्य में किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल बिहारी के दोहों में 'समाहार शक्ति' के साथ भाषा की समास–शक्ति को विहारी की सफलता का प्रमुख कारण मानते है। बिहारी मुख्य रूप से दरबारी कवि थे जिसके कारण श्रृगांर चित्रण में इनकी दृष्टि अत्यधिक रमि है। इनकी नीति सम्बन्धी उक्तियाँ मानव जीवन का सार प्रस्तुत करती हैं।

मिर्जा जयसिंह जब अपनी नवोढा रानी के प्रेम में आशक्त होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो गये थे तब बिहारी ने एक दोहा लिखकर राजा को सुनाया दोहे का कामासक्त मिर्जा पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने वापस राज्य का कार्य भार संभाल लिया एवं बिहारी को अपने दरबार में आश्रय दिया साथ ही बिहारी को 'बिहारी सतसई' रचना की प्रेरणा मिली और कहा जाता है कि मिर्जा के द्वारा विहारी को प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी इनाम स्वरूप दी जाती थी । बिहारी ने अन्योक्ति के माध्यम से जयसिंह को सचेत किया –

"नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अली कली ही सों बँध्यौं , आगे कौन हवाल।।"[01]

बिहारी के दोहों में 'कल्पना की समाहार शक्ति एवं भाषा की समास शक्ति' है विभिन्न विद्वानों ने बिहारी लाल जी की प्रशंसा की है –

"सतसैया के दोहरे , ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे घाव करै गंभीर।।"[02]

बिहारी जी संत्सगति का महत्व वेद, पुराण के ज्ञान से भी अधिक मानते हैं ।जिसे उन्होंने बहुत ही सुन्दर ढंग से नाक के आभूषण बेसरी का मोती के साथ के माध्यम से समझाया है–

"अज्यौं तर्यौना ही रह्यौ , श्रुति सेवत इक अंग।
नाकबास बेसर लह्यौ , बसि मुक्तनि के संग।।"[03]

नायिका नायक को कहती है कि अपनी समानता वाली वस्तुओं एवं मनुष्यों के साथ रहने से उनकी शोभा बढ़ती है जैसे पान की पीक का साथ लाल ओठ एवं काजल का साथ श्याम नेत्रों से सुशोभीत होते हैं –

स्व-प्रमाणित

स्वर्ण को पाते ही मनुष्य पर मादकता छा जाती है जबकि मादक पदार्थ धतूरे को खाने के बाद मादकता छाती है अतः मादक पदार्थों से अधिक मादकता धन मिलते ही हो जाती है –

"कनक कनक तैं सौगुनौ मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाऐं बौराइ इहिं पाऐं हीं बौराइ ।।"[12]

बिहारी ने कहा है कि कुमति व बुरे कार्यों में लिप्त लोग अपनी बुरी प्रवृत्ति को त्यागे बिना अच्छी संगति में रहने के बावजूद सुमति नहीं पा सकते है –

"संगति सुमति न पावहीं परे कुमति कैं धध।
राखौ मेलि कपूर मैं , हींग न होइ सुगंध।।"[13]

बिहारी धन के सम्बन्ध में कहते है कि धन के आने–जाने में संतोष बना रहे तो कोई भी ध नप्राप्ति के लिए कुमार्ग नहीं अपनायेगा –

"जात जात बितु होतु है ज्यौं जिय मैं संतोषु।
होत होत जौ होइ तौ होइ घरी मैं मोषु।।"[14]

बिहारी ने कहा है कि गुणसम्पन्न व्यक्ति के गुणहीनों के बीच जाने पर उसके गुणों का ग्राही न होने के कारण उसे भी अपने गुणों को छोड़ना पड़ता है । बिहारी नगरीय जीवन से प्रभावित थे गाँव के लोगों की वे उपेक्षा करते हुए नजर आते हैं –

"सबै हँसत करतार दै नागरता कैं नावँ।
गयौ गरबु गुन कौ सरबु गऐं गँवारैं गावँ।।"[15]

बिहारी लाल ने अन्योक्ति के माध्यम से नीति सम्बन्धी दोहे कहे हैं जो अपनी बात भी कह देते है और अपने आश्रयदाता जयशाह को सचेत भी कर देते है वे कहते हैं कि दुष्ट के निमित्त अपने लोगों को कष्ट देना उचित नहीं है –

"स्वारथु, सुकृतु न, श्रमु बृथा; देखि, बिहंग, बिचारि।
बाक पराऐं पानि परि तूँ पच्छीनु न मारि।।"[16]

रीतिकाल में मुगलों के उत्कर्ष की चरमसीमा थी एवं धीरे–धीरे पत्तन की ओर उन्मुख हुए बिहारी राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे वे शाहजहाँ के अधीन रहकर शासन करते थे, और दो शासकों के अधीन रहकर जनता को अधिक दुख एवं कष्ट होता है। जिसे वे इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

"दुसह दुराज प्रजानु कौं क्यौं न बढ़ै दुख – दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत मिलि मावस रबि – चंदु।।"[17]

जीवन में विनय के गुण को अपनाने की सीख सभी विद्वान, विचारक एवं नीतिकार देते है। विनयशील मनुष्य ही उन्नति करता है जिसे बिहारी नल के जल के माध्यम से बताते हैं –

"नर की अरू नल–नीर की गति एकै करि जोइ।
जेतौ नीची ह्वै चलै, तेतौ ऊँचो होइ।।"[18]

मनुष्य की मूल प्रवृत्ति यत्न करने पर भी नहीं बदलती है जिसे बिहारी ने फुव्वारे के उदाहरण के माध्यम से व्यक्त किया है कि नल के जल का अंत हमेशा नीचे को ही होता है –

स्व-प्रमाणित

"कोरि जतन कोऊ करौ , परै न प्रकृतिहिं बीचु।
नल –बल जलु ऊँचैं चढ़ै, अंत नीच कौ नीचु।।"[19]

मनुष्य के मुँह से झूठे वचन ही निकलते हैं इसलिए आँखों को बनाया गया जिससे मनोभाव आँखों से पहचाने जा सके –

"झूठे जानि न संग्रहे मन मुँह – निकसे बैन।
याही तैं मानहु किये बातनु कौं बिधि नैन।।"[20]

बिहारी कहते है कि उपयोगी दुर्लभ वस्तु मिलने पर उसका महत्व बहुत बढ़ जाता है –

"प्यासे दुपहर जेठ के फिरे सबै जलु सोधि ।
मरुधर पाइ मतीरु हीं मारू कहत पयोधि ।।"[21]

बिहारी बहुविषयक ज्ञाता थे उनके नीति वचनों में बहुविविधता देखने को मिलती है बिहारी के नीति बिषयक दोहे वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं बिहारी ने ग्रहों के माध्यम से कहा कि लोग भले लोगों /ग्रहों को भला समझकर उन्हें सम्मान नहीं देते जबकि खोटे लोगों/ ग्रहों से डरकर उन्हें सम्मान/जप, दान देते हैं –

"बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु ।।"[22]

रीतिकाल के कवियों की नीति साहित्य के सम्बन्ध में डॉ0 नगेन्द्र का कथन है कि"भक्ति यदि इन कवियों के आकुल मन के लिए शरणभूमि थी,तो नीति संघर्षमय दरबारी जीवन के घात–प्रतिघातों से उत्पन्न मानसिक द्वंद्व के विरेचन के परिणामस्वरूप शांति का आधार थी। बिहारी रसिक कवि के साथ ही अपनी नीति सम्बन्धी उक्तियों के लिए प्रसिद्ध थे। बिहारी के नीति सम्बन्धी उक्तियाँ मानव व्यवहार का सार प्रस्तुत करती हैं एवं सांसारिक जीवन व्यवहार के लिए अनुभवों का एक कोष हमारे सम्मुख रखती है । बिहारी नगरीय जीवन शैली पसन्द करते थे । इनके दोहों में जहाँ राजसी विलास व्याप्त है वही भक्ति व नीति सम्बन्धी उक्तियाँ भी है जो इनके बहुज्ञता के साथ लोक व्यवहार की समाहार शक्ति लिए हुए है ।

सन्दर्भ

1.'रत्नाकर' जगन्नाथदास ,बिहारी रत्नाकर प्रकाशन साहित्य सरोवर, 17–ए, प्रभु नगर, नियर प्रताप नगर जयपुर हाउस, आगरा– 282010 (उ0प्र0)पृ0 सं0–01 वही पृ0 सं0 –13,वही पृ0 सं0–38,

2.'रत्नाकर' जगन्नाथदास,बिहारी रत्नाकर, संस्करण–2015, लोकभारती प्रकाशन इण्यिन प्रेस इलाहाबाद पृ0सं0– 52,वही पृ0 सं0–65,वही पृ0 सं0–135,वही पृ0 सं0–81,वही पृ0 सं0–89,वही पृ0 सं0–97,वही पृ0 सं0–104, वही पृ0 सं0–118, वही पृ0 सं0–120, वही पृ0 सं0–139, वही पृ0 सं0–148, वही पृ0 सं0–165, वही पृ0 सं0--166,वही पृ0 सं0–169,वही पृ0 सं0–171,वही पृ0 सं0–175,वही पृ0 सं0–180,

ई-प्रमाणित

3.'पांडेय' डॉ0 कुसुमाकर , रीतिकालीन हिन्दी साहित्य, संस्करण–2019 ,रावत प्रकाशन, 4264 / 3,अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली–110002,पृ0 सं0–43,वही पृ0 सं0–45,

4.'शुक्ल' रामचन्द्र,हिन्दी साहित्य का इतिहास,प्रकाशन साहित्य सरोवर 17 ए,प्रभु नगर, नियर प्रताप नगर,जयपुर हाउस,आगरा–282010 उ0 प्र0,पृ0 सं0–174,वही पृ0 सं0–175, 177,

5. डॉ0'नगेन्द्र' सह सम्पादक हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास

6. कुमार'डॉ0 सुधीन्द्र',रीतिकाव्य की इतिहास दृष्टि

7. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च इन साइंस,कमूनिकेशन एंड टेकनॉलाजी, वोलयूम 2, इसू 1, अप्रैल 2022 , ISSN (Online) 2581-9429,डॉ0 चन्द्रकांत मिश्रा,रीतिकालीन प्रमुख नीतिपरक

कवि : एक अध्ययन, अवधेश प्रताप सिंह यूनिवर्सिटी, रेवा मध्य प्रदेश